पुस्तिका समीक्षा

विज्ञान में नारी शक्ति : विकसित भारत की उड़ान

"**विज्ञान में नारी शक्ति: विकसित भारत की उड़ान**" शीर्षक से प्रकाशित यह पुस्तिका राष्ट्रीय विज्ञान दिवस २०२६ के अवसर पर तैयार एक अत्यंत सारगर्भित एवं प्रेरणादायक विज्ञान-संचार सामग्री है। इसका मुख्य उद्देश्य विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी के क्षेत्र में महिलाओं की भूमिका, उपलब्धियों और संभावनाओं को रेखांकित करते हुए "विकसित भारत" के निर्माण में उनकी भागीदारी को सशक्त बनाना है।

पुस्तिका की विशेषता इसकी विषय-वस्तु की व्यापकता और संतुलन में निहित है। प्रारंभिक खंड में भारत की प्राचीन परंपरा में विदुषी महिलाओं—जैसे गार्गी, मैत्रेयी आदि—के योगदान का उल्लेख करते हुए यह स्थापित किया गया है कि ज्ञान और विज्ञान के क्षेत्र में महिलाओं की उपस्थिति कोई नई घटना नहीं, बल्कि एक सशक्त ऐतिहासिक परंपरा का हिस्सा है। इसके बाद आधुनिक भारत की वैज्ञानिक महिलाओं की उपलब्धियों को अत्यंत प्रभावशाली ढंग से प्रस्तुत किया गया है, जिससे पाठकों को प्रेरणा मिलती है।

पुस्तिका में आँकड़ों, उदाहरणों और समकालीन संदर्भों का समुचित उपयोग किया गया है। स्टेम (STEM) शिक्षा में महिलाओं की बढ़ती भागीदारी, अंतरिक्ष अभियानों (जैसे चंद्रयान), जैव-प्रौद्योगिकी, चिकित्सा और क्वांटम

विज्ञान जैसे उभरते क्षेत्रों में उनकी भूमिका को तथ्यात्मक आधार के साथ प्रस्तुत किया गया है। यह सामग्री न केवल जानकारी देती है, बल्कि एक सकारात्मक दृष्टिकोण भी निर्मित करती है कि महिलाएँ विज्ञान के माध्यम से राष्ट्र निर्माण की अग्रणी शक्ति बन सकती हैं।

एक अन्य महत्वपूर्ण पक्ष यह है कि पुस्तिका केवल उपलब्धियों का उल्लेख भर नहीं करती, बल्कि चुनौतियों—जैसे लैंगिक असमानता, कार्यस्थल पर बाधाएँ, सामाजिक अपेक्षाएँ—को भी स्पष्ट रूप से सामने रखती है। साथ ही, सरकारी योजनाओं एवं नीतिगत पहलों का उल्लेख करते हुए समाधान की दिशा भी सुझाई गई है।

विशेष रूप से उल्लेखनीय है कि इस पुस्तिका में विभिन्न लेखकों/योगदानकर्ताओं द्वारा प्रस्तुत लेख, विचार और उदाहरण विषय को बहुआयामी दृष्टिकोण प्रदान करते हैं। प्रत्येक योगदान अपने आप में महत्वपूर्ण है और सामूहिक रूप से यह संकलन एक समृद्ध, संतुलित और प्रेरणादायक दस्तावेज़ के रूप में उभरता है। योगदानकर्ताओं के अनुभव, शोध एवं दृष्टिकोण इस पुस्तिका की विश्वसनीयता और प्रभाव को और सुदृढ़ करते हैं।

भाषा शैली सरल, प्रवाहपूर्ण और प्रेरक है, जो विद्यार्थियों, शिक्षकों एवं सामान्य पाठकों सभी के लिए उपयुक्त है। लेखों का संयोजन इस प्रकार किया गया है कि पाठक क्रमशः इतिहास, वर्तमान और भविष्य—तीनों आयामों को समझ सके।

निष्कर्षतः, यह पुस्तिका न केवल विज्ञान में महिलाओं की भूमिका को सशक्त रूप से प्रस्तुत करती है, बल्कि "विकसित भारत" के निर्माण में उनकी अनिवार्य भागीदारी को भी रेखांकित करती है। विज्ञान और समाज के अंतर्संबंध को समझाने के साथ-साथ यह पुस्तिका "नारी शक्ति" को वैज्ञानिक प्रगति के केंद्र में स्थापित करने का सफल प्रयास है। यह विद्यार्थियों, शिक्षकों, विज्ञान संचारकों तथा नीति-निर्माताओं सभी के लिए उपयोगी और प्रेरक पठन सामग्री सिद्ध होती है। "विकसित भारत" के स्वप्न को साकार करने में महिलाओं की भूमिका को समझने हेतु यह एक महत्वपूर्ण और समयोचित प्रकाशन है।

सायंस फॉर सोसायटी, बिहार द्वारा प्रकाशित इस पुस्तिका का मूल्य मात्र ₹ ३० है।

इसकी प्रति प्राप्त करने हेतु अपना निवेदन sfsbihar@yahoo.com इस ईमेल पर प्रेषित कर सकते हैं।